ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 278-279
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में संघर्ष की अभिव्यक्ति

श्रद्धा यादव

शोध अध्येत्री– लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ0प्र0), भारत

Received- 04.03.2022, Revised- 07.03.2022, Accepted - 11.03.2022 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः – *स्त्री विमर्श के सन्दर्भ में जब हम मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों का मूल्यांकन करते हैं,तो उनका प्रत्येक उपन्यास आदि से अंत तक औरत की त्रासदी और उसके संघर्ष को व्यक्त करता है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में नारी–पीड़ा और इस पीड़ा से जागृत अस्तित्व बोध के चलते स्त्रियों के संघर्ष को अत्यन्त मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। इनके उपन्यासों में नारी के विभिन्न स्वरूप स्पष्ट हुए हैं,कहीं माँ के रूप में तो कहीं बेटी के रूप में, कहीं बहन के रूप में, तो कहीं पत्नी के भूमिका में,कहीं सास–बहू की भूमिका में प्रस्तुत हुई स्त्रियाँ है,तो कही आदर्श जोड़ी, समर्पित प्रेमिका के साथ–साथ विद्रोहिणी नारी भी अंकित है। देवरानी, जेठानी, ननद – भाभी, सेविका–सखी और इसी तरह के किसी न किसी पारिवारिक सम्बन्धों से जुड़ी हुई हैं। इनके उपन्यासों में नारी चाहे जिस भूमिका में प्रस्तुत की गई हो,किन्तु अंततः वह विभिन्न बीड़ाओं, यातनाओं को झेलती हुई एक संघर्षमयी नारी है।नई चुनौतियों को स्वीकार करने वाली नारी है ।*

कुंजीभूत शब्द– उपन्यास, मूल्यांकन, संघर्ष, नारी–पीड़ा, पीड़ा, जागृत, अस्तित्व, अत्यन्त मार्मिक, स्वीकार।

इस दृष्टि से चाक की सारंग,इदमन्नयम की मंदा,कस्तूरी कुंडल बसै को कस्तूरी,विजन की डॉ. आभा,अल्मा–कबूतरी की अल्मा,भूरीबाई एवं कदमबाई, आदि स्त्रियों का संघर्ष उपन्यास के अन्य स्त्री पात्रों को ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण स्त्री–जगत को प्रेरणा एवं संघर्ष का सबल प्रदान करता है ।

स्त्रियों के शोषण एवं दमन का प्रधान कारण है पुरूष सन्तात्मक समाज व उसकी व्यवस्थायें, जिसके सन्दर्भ में डॉ. निर्मल जैन ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा है कि–"कड़वी सच्चाई यह है कि पुरूष प्रधान समाजों में सदियों से महिलाओं का दमन और शोषण होता रहा है,समाज में उनकी भूमिका और उनकी सामाजिक हैसियत का निर्धारण पुरूष के द्वारा हुआ है समाज के हाथों जो दर्जा स्त्री को दिया जाता है वह किसी हद तक उसकी मानसिक बनावट का नियामक होता है औपनिवेशिक इस पूरे प्रश्न को पुरूष के खिलाफ स्त्री या पुरूष बनाम स्त्री के ढाँचे में देखने की मजबूरी पैदा करती है। कुल जमा नतीजा यह होता है कि वह या तो पुरूष प्रदत्त परिभाषा में अपनी सार्थकता तलाशती हुई उसके समर्थन में खड़ी हो जाती है या विरोध में,इसलिए तमाम महिला–रचनादारों ने इसी'एंग्जाइरी ऑफ आथरशिप' के मानसिक चौखटे में कर्म को अंजाम दिया है।"[1]

कस्तूरी कुण्डल बसै उपन्यास में आर्थिक विपन्नता के कारण सोलह वर्षीय कस्तूरी का विवाह एक ऐसे व्यक्ति के साथ कर दिया जाता है जो बूढ़ा और बीमार है। विरोध करने पर उसे सामाजिक मर्यादाओं की दुहाई की जाती है।

"घर की इज्जत में रहने वाली बहन को उसका वश चले तो खदेड़कर गाड़ दे पीले रंग की आँखे लाल हो गई। छोटे भाई ने सवाल किया कि मेरी ससुराल के लोग क्या कहेंगे? कैसे सामना करूँगा लोगों का । सोचते ही घबरा जाता हूँ और बिदाई के नाम पर छोटे भाई ने दाँत पीसे। अपने परिवार की महिमा के चाँद में कलंकनुमा यह बहन.....इसने ब्राह्मण परिवार के उपाध्याय गोत्र की सनाढ्य परंपरा मैली करने की ठानी है ।[2]

परिवार की यह महिमा है कि कस्तूरी को आठ सौ में बेच दिया जाता है जिसको ससुराल में जाकर यह सुनना पड़ता है कि उसकी स्थिति खरीदी हुई घोड़ी से से ज्यादा नहीं है। एक दिन मोती–झाला की बीमारी से तड़प–तड़पकर पति की भी जीवन लीला समाप्त हो जाती है।

इदन्नन में सुगना जैसी अल्हण बालिका इसी समस्या का शिकार होती हुई खुदखुशी कर लेती है। इन परिवारिक समस्याओं के अतिरिक्त आर्थिक विपन्नता भी इनके उपन्यासों में अंकित है। हालांकि मैत्रेयी पुष्पा मानती है कि आर्थिक स्वंतत्रता मिलने भर से स्त्रियों की सारी समस्याओं का हल नहीं हो जाता लेकिन यह ऐसी आधार भूमि है जिसे प्राप्त किये बिना आगे का रास्ता तय नहीं किया जा सकता। डॉ. निर्मला जैन ने विभिन्न महिला लेखिकाओं के स्त्री सम्बन्धी कथा साहित्य के स्वरूप पर विचार करते हुए कहा है कि "इतिहास साक्षी कि पुरूष ने स्त्री को जिन मोर्चों पर लगातार कुचलता है उनमें से एक अर्थ और दूसरा सेक्स। आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होने के लिए संघर्ष करती हुई स्त्री,मलिा लेखिकाओं की प्रिय थीम है।"[3]

अतः आत्मनिर्भरता आर्थिक रूप में अति आवश्यक है क्योंकि आर्थिक आत्मनिर्भरता के अभाव के कारण ही उसके विवाह में उसकी मर्जी को शामिल नहीं किया जाता है। मैत्रेयी पुष्पा ऐसे ही कुछ आर्थिक सवालों से उलझती दिखाई देती हैं। पिता की

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

सम्पत्ति में पुत्री की बराबर की भागीदारी को आवश्यक मानती हैं। जिससे उनका आर्थिक पक्ष मजबूत हो । स्त्री को अपने घर जन्मभूमि को छोड़कर दूसरे घर में जाना उसके जीवन की त्रासदी है। वे सवाल करती है कि जिस घर में उसने जन्म लिया जिन माता–पिता ने उसका पालन–पोषण किया उनकी सम्पत्ति पर व्यावहारिक रूप से उनका कोई हक क्यों नहीं है।

मैत्रेयी पुष्पा इसी भाँति भारतीय संस्कृति में स्त्री की स्थिति विरोधाभासपूर्ण मानती है। एक ओर उसे ,यत्र नारी यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। कहकर समाज,परिवार के सर्वोच्च आसन पर बिठाया गया है तो दूसरी ओर स्वभाव एवं नारीगां नराणाहिमदूषणं–कहकर पवित्र कर दिया है। स्त्री सम्बन्धी इन दोनों पहलुओं पर मैत्रेयी पुष्पा की पैनी नजर है। भारतीय संस्कृति जितनी खोखली है उसकी जड़े उतनी ही गहरी है,इन जड़ो को काटना बड़े साहस का काम है । मैत्रेयी पुष्पा जी के उपन्यासों की स्त्रियाँ साहस दिखाती है,वो चाहे इदन्नम की विधवा 'प्रेमा' हो या कुसुमा,चाक की रेशम हो या सारंग नैनी सभी ने स्पष्ट विरोध किया है विडम्बना देखिए कि यौन–शुचिता की जिम्मेदारी स्त्री की है। उसके साथ कुछ भी होगा तो उसकी अपराधी सिर्फ वही होती। पुरूष को कोई कुछ न कहेगा। आदमी तो होते ही ऐसे हैं,कहकर उन्हें दोषमुक्त कर दिया जाएगा,सजा की भागीदार बनती है सिर्फ स्त्री।

''.....गाँव में छः आठ ऐसे जोड़े है, जिन्होने दूसरा विवाह किया है, माना कि पुरूष है,तो क्या अम्मा स्त्री होने के नाते दण्ड की, मखौल की हेय दृष्टि की भागीदार है? यदि ऐसा नहीं है तो उन पुरूषों से अटपटे प्रश्न क्यों नहीं पूछता कोई? उन्हें क्यों कोई निकाल देता घर से कोई ? उनकी निगाह नीची क्यों नहीं होती? वे अस्पताल जैसी सार्वजनिक जगह में रात काटने को क्यों विवश नहीं किये जाते ?''[4]

इसी तरह भारतीय संदर्भ में धर्म की आड़ लेकर समाज की सबसे प्रतिक्रियावादी ताकते नारी को घर की चारदीवारी में कैद रखना चाहती है। साथ ही स्त्रियों का दुर्भाग्य तो देखिये कि यह संसार उन्हें किसी भी तरह चैन से नहीं जीने देता। उर्वशी का नदी के कूदना(बेटवा बहती रही) निशा का फाँसी लगाना(कस्तूरी कुण्डल बसै) रज्जो का कुएँ में कूदना (कहे ईसुरी फाग) जैसे ह्रदय विदारक प्रसंग स्त्रियों की दयनीय दशा के प्रति सोचने के लिए बाध्य करते हैं। मैत्रेयी पुष्पा का मानना है।''स्त्री को शास्त्रीय और धार्मिक खांचों में डालकर देखने की प्रवृत्ति समाज में आदर्श व्यवस्था स्थापित कर सकती है। सिद्धान्त भी गढ़ सकती है,लेकिन मनुष्य जीवन के सच को उजागर नहीं कर सकती। बस इसी संघर्षो को विद्रोह कर फतवा दे दिया जाता है। दर असल हमारे पारम्परिक कानून चाहते हैं कि जैसा कुछ चलता आया है। वैसा ही चलता जाये। हमारे कंधो पर अतीत पौराणिक और ऐतिहासिक बोझ बनकर लदे रहें। यहीं आगे बढ़ने के रास्ते रूक जाते हैं।''[5]

अतः मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री की सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक व धार्मिक परम्पराओं मान्यताओं को चित्रित तो किया ही गया है साथ ही साथ स्त्री कैसे संघर्ष करते हुए अपने ऊपर थोपे गये मूल्यों व परंपरा की जंजीरों को ढीला करते हुए

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 निर्मला जैन हंस जुलाई 1994 पृष्ठ 40 लेख कथा और नारी संदर्भ।
2. मैत्रेयी पुष्पा– कस्तुरी कुण्डल बसै पृष्ठ संख्या–9.
3. डॉ0 निर्मला जैन–हंस जुलाई 1994 पृष्ठ– 4.
4. मैत्रेयी पुष्पा इदन्नमम–पृष्ठ – 27.
5. मैत्रेयी पुष्पा हंस जुलाई 2004 पृष्ठ– 38 लेख– 'कथा साहित्य में सती पूजा'।

*****